International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March - 2019
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय ग्रामीण समाजो का अध्ययन

डॉ0 सुजीत रंजन
समाजशास्त्र विभाग
(ललित नारायण मिथिल विश्वविद्यालय)
दरभंगा।
पता :– मोहल्ला– लक्ष्मीसागर कॉलोनी,
नियर– जे.पी. चौक,
पोस्ट– लक्ष्मीसागर,
पिन कोड– 846009
मो0– 9608462527
ई–मेल sranjan72@gamil.com

भारतीय जनगणना के मानदंडो के अनुसार गांव की जनसंख्या 5000 से कम होनी चाहिए। गांव पंचायती राज व्यवस्था से संबंधित है। इस प्रकार गांव में ग्राम पंचायत की व्यवस्था है। गांव में उत्पादन का मुख्य साधन कृषि है। भारतीय गांव में हाल के वर्षो तक संयुक्त परिवार की संरचना अधिक सुदृंढ़ थी तथा जजमानी व्यवस्था मौजूद थी। गांव में सामुदायिक चेतना अधिक प्रबल होती है। तथा लोगों में घनिष्ट संबंध मैजूद होता है। साधारणतः गांव में गतिशीलता एवं सामाजिक परिवर्तन की गति अधिक तीव्र नहीं होती है। लेविस ने गांव अवधारणा को स्पष्ट करते हुए बताया है कि गांव प्रकृति पर निर्भर होता है। तथा उसका आकार सीमित होता है। उनके अनुसार गांव में घनिष्ठ एवं प्राथमिक संबंध पाए जाते है। सेंडरसन ने अपनी पुस्तक ''द रूरल कम्युनिटी'' में स्पष्ट किया है कि एक गांव में स्थानीय लोगों की सामाजिक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2(1), February 2019
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अंतः क्रिया और उनकी संस्थाऐं सम्मिलित होती है। साथ हीं गांव के खेतो के चारो ओर झोपड़ियाँ बनी होती है। तथा उनमें वे निवास करते है। प्रो0के0एल0 शर्मा ने स्पष्ट किया है। कि गांव राष्ट्रीय धारा के आर्थीक, राजनीतिक एवं सामाजिक संरचना ने अपने महत्व को रेखांकित करते है। महात्मा गांधी ने भी राष्ट्र को बुनियादी आधार के रूप में स्वीकार किया। उन्होने अपने रचनात्मक कार्यक्रमो में ग्रामीण समुदाय का विशेष महत्व प्रदान किया। विनोवा भावे ने भू–दान आंदोलन का मुख्य केन्द्र गांव को बनाया। लोकनायक जय प्रकाश नारायण ने अपनी संपूर्ण क्रांति के चितन में ग्रामीण समुदाय के सर्वटोन्मुखी विकास के लिए रचनात्मक कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया। प्रसिद्ध फ्रांसीसी समाजशास्त्री लुई ट्रयूमो ने गांव के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित तीन आयामी को निर्धारित किया है।

1. गांव का विश्लेषण भू–स्वामित्व के आधार पर होता है। भू–स्वामित्व के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण का निर्धारण होता है। सामाजिक प्रतिष्ठा का मापदंड भी गांव के अनतर्गत भू–स्वामित्व से जुड़ा हुआ है। शक्ति संरचना का एक महत्वपूर्ण मानदंड भू–स्वामित्व से संबंधित है।
2. गांव परम्परागत आर्भिक एवं राजनीतिक संरचना से संबंधित है। जाति, विवाद, वंश, परपरा, नातेदारी, सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी लोकतांत्रिक देशों में गांव में अधिकतर लोग रहते है। अतः सत्ता की राजनीति में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2(1), February 2019
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भी गांव की निर्णायक हिस्सेदारी होती है। एम.एन. श्री निवास ने संस्कृविकरण लौकिकीकरण तथा प्रभु जाति के आधार पर ग्रामीण जीवन की व्याख्या की है। प्रो0 एस0 सी0 दुबे ने भी ग्रामीण जीवन के विश्लेषण किया है। वस्तुतः भारत जैसे विकासशील पेशो में गांव भाग्य की रेखा होती है। ग्रामीण आर्थिक संरचना के सुदढ़ होने पर राष्ट्र का विकास भी होता है। महानगरो की चकाचौध, मैविकवाद का उन्माद, उपभोक्ता संस्कृति का विकास तथा व्यापार एवं रोजगार के अवसरो के कारण गांव से लोगों का पलायन हो रहा हैं भारी तादान में पूर्वांचल के लोग दिल्ली, मुंबई, कोलकाता तथा अन्य महानगरो में दिखाई पड़ते है। इस प्रकार गांव के दक्ष मजदूरो का अभाव हो रहा है। गांव का आर्थीक विकास प्रभावित हो रहा है। गांव के लोग नगरो में फुटपाथे पर सोते है। रहने के लिए घर नहीं है। आधारभूत सुविधाओ के अभाव में भी गांव के लोग रोजगार के अवसरो के कारण नगरो की ओर उन्मुख है। यह एक संक्रमण का दौर है। एड्स की बीमारी फैल रही है, डेगू का कहर जारी है, शहरो में पर्यावरण सरक्षण संकट के कगार पर है। प्रदुषण के कारण लोगों का जीना मुहाल है। अतः इक्कीसवी शताब्दी में गांव संपूर्ण विकास की ओर उन्मुख है। गांव को आधारभूत संरचना चाहिए। सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं महत्वपूर्ण आधार भूत संरचनाओं के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2(1), February 2019
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मुक्कमल विकास के आधार पर गांव का कयाकल्प हो सकता हैं पंजाब तथा हरियाण ग्रामीण विकास के ज्वलंत उदाहरण है। इस प्रकार इक्कीसवी शताब्दी में गांव को खुखहाल करना होगा। गांव ऐसा होना चाहिए कि गांव से लोगों का पलायन नहीं हो।